IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जैविक कृषि एक वरदान

डॉ. मनोज दीक्षित

सहायक आचार्य विद्यासंबल योजना

राजकीय महाविद्यालय मालाखेडा (अलवर)

भाोध सारांश

वर्तमान समय की इस भयावह स्थिति में जैविक कृषि एक वरदान है जो कि मानव को न केवल आत्मनिर्भर बनाएगी वरन् आज की मूल समस्या अधिक उत्पादन व अधिक आवश्यकताओं की पूर्ति में निजात दिलाएगी। ग्रामीण स्तर पर जैविक कृषि एक सरल व सुगम पद्धति है जिसे अपनाकर कृषक ऋण ग्रस्तता से मुक्त होगा और पोषणीय विकास की ओर अग्रसर होगा। जैविक कृषि वर्तमान में आ रही विकट समस्याएं जैसे तापमान का उत्तरोत्तर बढना, जलवायु परिवर्तन, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मरूस्थलीकरण, बाढ़ आदि को दूर करने में सहायक सिद्ध होगी साथ ही जैविक कृषि द्वारा उत्पन्न शुद्ध एवं लाभकारी होंगे जिनसे बेहतर स्वास्थ की कल्पना की जा सकती है।जैविक कृषि अपनाकर भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिए एक उत्तम एवं अच्छा विकास करने का वातावरण निर्मित होगा और भविष्य की पीढ़ी का जीवन सुगम रूप से संचालित हो सकेगा। मानव की आज की चेतना भविष्य में एक बेहतर कल को जन्म देगी।

शब्द कुंजी (Keywords) : जैविक कृषि, खाद्य सुरक्षा, जैविक उत्पाद, कृषि विकास, जलवायु परिवर्तन।

परिचय

कृषि शब्द को अंग्रेजी भाषा में Agro culture के नाम से संबोधित किया जाता हैं ये कि Agro शब्द से बना है। जिसका अर्थ सट्टी को जोतना अर्थात cultivation होता है। एक मानव समूह या मानव समुदाय द्वारा मिनिथ्यों पर की जाने वाली कला या वह कार्य जिसे फसलें उत्पन्न होती है और मानव अपनी आवश्यकता की पूर्ति करता है कृषि कहलाता है। कृषि एक अत्यन्त व्यापक एवं प्राचीन आर्थिक कार्य है। जिसके विभिन्न स्वरूप देखने को मिलते हैं। इसमें कुदाल की सहायता से जीवन निर्वाध वाली खेती से लेकर वर्तमान में उन्नत यंत्रों द्वारा वैज्ञानिक तरीकों से संपन्न कृषि कार्य को भी सम्मिलित किया जाता है अर्थात मानव द्वारा आवश्यकताओं की पूर्ति (उदरपूर्ति) हेतु भूमि का सीना चीरकर फल या फसल प्राप्त करना ही कृषि कहलाता है। कृषि प्राकृतिक वातावरण पर आधारित कार्य है जिसका मानव अपनी क्षमता, बुद्धि, विवके के साथ उपयोग करता है तथा समयानुसार संशोधन कर उत्पादन प्राप्त करता है। कृषि उपयुक्त घरातल, जलवायु, मिट्टी व जैविक तत्वों द्वारा निर्धारित होती है। इन्ही कारकों की विविधता के कारण ही कृषि में विभिन्नता एवं कृषि के विविध रूप देखने को मिलते है।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से ही कृषि कार्य को मानव के लिए सर्वोपरी एवं सर्वोत्तम माना गया है। कृषि कार्य से न केवल मानव अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करता है वरन् स्वयं स्वामित्व एवं आत्मनिर्भर बनता है। मानव के उद्‌भव के साथ–साथ ही कृषि का कार्य प्रारंभ हुआ। परंतु मानव की बढ़ती आवश्यकताओं से कृषि कार्य में निरन्तर परिवर्तन हुए जो वर्तमान में जारी है मानव ने आदिम ढंग से शुरू किया यह कार्य वर्तमान में उन्नत होकर उद्योग का रूप ले चुका है। वर्तमान समय में विशाल जनसंख्या जिसका बहुत बड़ा भाग अपनी उदरपूर्ति तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषि पर निर्भर है साथ ही विकासशील देशों में कृषि कार्य रोजगार का प्रमुख साधन है। अतः कृषि मानव के मूल कार्यों में सम्मिलित है। आवश्यकताएँ निरन्तर बढ़ रही है जिसका बहुत अधिक भार कृषि पर पड़ रहा अतः वर्तमान एवं भविष्य की जरुरत या मजबूरी को समझ कर जैविक खेती करना ही एक मात्र विकल्प रह जाता है। मानव को आज बड रहे संकटों को समझ कर उपाय सुझाने होंगे भविष्य में पेट्रोलियम के बड़ते दम और घटती उपलब्धता से उर्वरक एवं कीटनाशको की उपलब्धता खतरे में पद जाएगी तथा कृषि पर गहन संकट खड़ा हो जायेगा तब एक मात्र उपाय जैविक खेती ही संभव होगी विश्व में 10 मिलियन टन पेट्रोलियम का उपयोग यूरिया एवं डी.ए.पी. बनाने में उपयोग होता है जिससे 250 मिलियन टन ब्2 पैदा होगी जो की जलवायु परिवर्तन का एक बहुत बड़ा कारण है इसके विपरीत जैविक खेती में ब्2 का उत्पादन नगण्य होता है साथ ही ब्2 की बहुत बड़ी मात्रा को यह भूमि स्थापित कर पर्यावरण को स्वच्छ बनती है जैविक खेती वर्तमान कृषि के लिए एक वरदान के रूप में उत्पन्न हुई है जिससे न केवल वर्तमान की विभिन्न आवश्कताओ की पूर्ति वरन भविष्य में उत्पन्न होने वाले पर्यावर्णीय, स्थलीय एवं मानव जीवन में उत्पन्न संकट दूर होंगे तथा भविष्य की पीढ़ी के लिए स्वास्थवर्धक वातावरण का निर्माण होगा।

जैविक कृषि

कृषि का ऐसा रूप वर्तमान में अत्यन्त आवश्यकता है। पर्यावरण भूमि को बचाने के लिये और उपभो स्वास्थ के लिए जैविक खेती नितान्त आवश्यक है। आज के युग की यह जरूरत भी मजबूरी भी है क्योंकि बढ़ती जनसंख्या, आवश्यकता का बोझ भूमि पर पड़ रहा कम से कम समय में, कम से कम अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करना भूमि की उर्वराशक्ति को बचाना है ताकि आने वाली पीढ़ी भी अपनी आवश्यकता पूर्ति कर सके। अतः जैविक खेती एव उपाय है जो कि सुदीर्घजीविता पर आधारित है। वर्तमान में भूमि पर अत्यधिक दबाव के रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयों कीटनाशकों का असीमित प्रयोग न केवल को प्राकृतिक उर्वरकता को धीरे–धीरे कर रहा है वरन् फसलों की गुणवत्ता निरन्तर कमी हो रही है। इस समय यवि प्रकार उपयोग चलता रहा तो वह दिन दू जब भूमि बंजर में बदल जाएगी और अपनी मूल आवश्यकता की पूर्ति कर असमर्थ होगा। जैविक कृषि से तात्पर्य कृषि का वह रूप जैविक तत्वों का उपयोग कर फसल उत्पादन किया जाता है अर्थात् जैविक क रासायनिक उर्वरक, रासायनिक कीटनाशक उपयोग नहीं किया जाता जिससे मिट्ट उर्वराशक्ति प्राकृतिक रूप से निरन्तर बढ़ और उत्पादन में भी वृद्धि होती है। जैविक कृषि अपोषणीयता से पोषणीय विकास की ओर जाने की पहल है।

जैविक कृषि एक वरदान

कृषि का उदभव अचानक नही हुआ बल्कि कृषि के जन्म एवं विकास में पर्याप्त समय व्याप्त है प्राचीन समय में जब मानव अपनी उदर पूर्ति एवं अन्य आवश्कताओ की पूर्ति हेतु धुम्मकड़ जीवन व्यतीत करता था और उका जीवन बहुत कठोर था तब वह एक पशु समान जीवन व्यतीत कर रहा था धीरे – धीरे मानव ने अपनी बुद्धि जा उपयोग कर प्राकतिक संसाधनों को जानना एवं उनका उपयोग करना सीख लिया तथा उसे अपने जीवन को सरल बनाने की आवश्कता महसूस हुई इस हेतु उसने सर्वप्रथम पेड़ पोधों एवं जानवरों को अपना सहायक बनाया और अपने पास उपलब्ध पत्थर से ओजार बना कर जमीन को खोदकर बीजारोपण एवं पोधरोपण का कार्य प्रारंभ किया इसे आदिम कृषि कहा जाता है इस प्रकार सर्प्रथम कृषि का जन्म हुआ। कृषि के जन्म के पश्चात कृषि का विकास सामाजिक संस्कृति से जुड़ गया और इन्ही संस्कृतियो ने मानव के अनुभव तथा कृषि में समृयानुसार परिवर्तनों, गुणों, विशेषताओं को एकत्रित किया और कृषि में नवीन विचारों, प्रविविधयों का विकास होना प्रारंभ हो गया। कृषि के इस उत्तरोत्तर विकास से मानव जीवन में भी स्थायित्व प्रदान हुआ और घुमक्कड़शील मानव एक स्थान पर स्थापित हुआ। मौनव ने धीरे–धीरे भूमि की विविधता एवं क्षमता को समझा एवं अपने अनुभवों व बुद्धि का उपयोग कर अधिक उत्पादन प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुआ। जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ कृषि में निरन्तर परिवर्तन हुए और उत्पादन में वृद्धि हुई। वर्तमान में तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या एवं बढ़ती मांग की पूर्ति करना अत्यन्त

आवश्यक हो गया। अतः कृषि भूमि पर अत्यधिक दबाव उत्पन्न हुआ और मानव कम से कम भूमि पर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के प्रयास मैं जुट गया। अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु मानव ने कई ऐसे साधनों का उपयोग किया जिनसे कम समय में अधिक उत्पादन प्राप्त होता है परंतु इनमें से कई ऐसे साधन है जो वर्तमान में तो अधिक लाभ देते है परंतु दीर्घसमय में वह भूमि के लिए हानिकारक होते है। जैसे रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, अत्यधिक भूमिगत जल की सिंचाई, कीटनाशकों का रासायनिक उपयोग आदि भूमि की उर्वराशक्ति को कमजोर बनाते हैं और भूमि धीरे–धीरे बंजर होने की स्थिति में आ जाती है।

वर्तमान की आवश्यकता पूर्ति एवं संरक्षण की दृष्टि से जैविक खेती सर्वोत्तम तरीका है। जैविक खेती इस प्रकार खेती है जिसका प्रचलन करीब दो दशकों में बहुत तेजी से बढ़ रहा है। जैविक खेती भूमि की उर्वराशक्ति में वृद्धि करने के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन, सूखा, अतिवृष्टि, तापमान में तीव्र उतार–चढ़ाव आदि को नियन्त्रित करने में सहायक है। वर्तमान में कृषि भूमि रासायनिक उर्वरकों जैसे डी.ए.पी., यूरिया, म्यूरेट ऑफ पोटाश एवं कीटनाशक जैसे मेटासिसटाक्स, पेरोफैक्स, एटाजीन आदि से क्षतिग्रस्त हो चुकी है और इसमें पैदा होने वाला पदार्थ भी जहरीला हो चुका है। अतः सबसे पहला कार्य कृषि भूमि को जीवित करना है उसके लिए इन सब संसाधनों का प्रयोग बंद करना होगा ताकि जमीन को पुनः स्वस्थ उत्पादन हेतु तैयार किया जा सके।

एक गाय एक वर्ष में लगभग 3.5 टन गोबर देती है जिससे लगभग 2 टन खाद बनती है जो कि एक बीघा जमीन में तीन फसलों के लिए पर्याप्त होती है। इसी प्रकार गाय एक वर्ष में लगभग एक हजार लीटर मूत्र पैदा करती है जिससे आधा तो खाद यो सिंचाई के साथ दे दिया जाए तथा शेष 500 लीटर गौमूत्र व नीम की पत्ती से इतना कीट नियंत्रक बन सकता है कि एक बीघा जमीन में एक वर्ष में प्रत्येक 15 द्वित बाद 20 छिड़काव किए जा सकते हैं। नीम की पत्तियां गौमूत्र सहित कीटनाशक की पूर्ति करती है साथ ही हरी खाद के रूप में भी काम आती है। एक नीम से कम से कम 50–60 किलो निबोली मिलती है जिससे 10–12 लीटर नीम तेल निकालने के बाद 40 किलो खल को जमीन में मिलाने से उत्पादन के साथ पोषक तत्वों की मात्रा भी बढ़ जाती है तथा फसल में रोग भी कम लगता है अर्थात जैविक खेती हेतु एक गाय व एक नीम का पेड़ होना ही पर्याप्त है। जैविक खेती में उर्वरकता बढ़ाने के लिए गोबर खाद, हरी खाद, खली की खाद आदि जैविक तत्वों का उपयोग किया जाता है इसके अतिरिक्त वर्तमान में वर्मी कम्पोस्ट अर्थात् केंचुआ खाद पर अधिक बल दिया जाने लगा है। केंचुआ खाद मिट्टी की उर्वराशक्ति को बढ़ाती है साथ ही मिट्टी को कई रोगों से मुक्त कर देती है।

जैविक कृषि हेतु सदैव सावधानियां

1. जैविक खेती में उपयोग किए जाने वाले सभी पदार्थ जैसे जैविक खाद, वर्मीकम्पोस्ट, खली की खाद, हरी खाद, कीटनाशक आदि सभी जैविक स्रोतों से ही प्राप्त होने चाहिए।

2. कुछ पदार्थ जैसे मानव मल, हड्डी, खून, शहर या ग्रामका अपशिष्ठ जल आदि जिसमें कई रासायनिक व रोगकारक जीवाणु हो सकते है इन सभी को रोगमुक्त एवं हानिकारक रासायनों से मुक्त कर उपयोग में लेना चाहिए।

3. जैविक खेत के चारों ओर वृक्षों के अवरोधक या ऊची मेढ़–बंदी होनी चाहिए ताकि हवा व पानी के साथ दूसरे खेत के रसायन हानि न पहुंचा सके।

4. स्वयं के द्वारा निर्मित जैविक खाद का ही उपयोग करें।

5. जैविक खेती हेतु उपयोगी बीज की किस्म जी के हेर–फेर से बनाई गई होनी चाहिए।

6. जैविक उर्वरकों व कीटनाशकों का आवश्यकतानुसार ही प्रयोग करना चाहिए।

जैविक कृषि से प्रारंभ के एक या दो वर्ष उपज का 70 से 80 प्रतिशत तक प्राप्त होता है। इसके बाद जैविक खेती से उत्पादन में निरन्तर वृद्धि होती है वहीं रासायनिक उर्वरकों की खेती में निरन्तर कमी होती है। जैविक खेती लंबे समय तक अधिक उत्पादन देती है तथा इसकी लागत रासायनिक खेती की तुलना में बहुत कम आती है। जैविक खेती द्वारा उत्पन्न फसल उत्पादन की गुणवत्ता उत्तम होती है जो कि अच्छे मूल्य में विकय होती है साथ ही स्वास्थ के लिए लाभकारी होती है। वैसे तो जितनी भी खाद्यान्न वस्तुए है जैविक खेती से उत्पादित हो जाती है परंतु कुछ फसलें बहुत अधिक मात्रा में पैदा

होती है और अधिक लाभ प्रदान करती है जैसे बासमती चावल, दालें, तिलहन में तिल व मूंगफली, फल (आम, अन्ननास, लीची, पैशन फल, केला), कपास, मसालें, कॉफी और चाय, नारियल, सूखे मेवा तथा औषधीय पौधे। पिछले दशक में जैविक कृषि की मांग 25 से 30 प्रतिशत तक बढ़ी है तथा रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से भूमि के खराब होने के कारण सरकार के प्रयास जैविक खेती को प्रोत्साहन देने हेतु बढ़े हैं।

सरकार द्वारा प्रयास

1. कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, ट्राइकोडर्मा, ट्राइकोगामा, फेरोमोनट्रेप, जीवाणु खाद, नीम के कीटनाशक आदि तकनीकों का प्रदर्शन सभी राज्यों में बड़े पैमाने पर किया जा रहा है।
2. नाबार्ड व जिला ग्रामीण विकास अभिकरण (डी.आर.डी.ए) अनुदान व ऋण उपलब्ध करा रहे हैं।
3. कई राज्यों में गांवों को जैविक गांव घोषित कर समग्ररूप से जैविक खेती कार्यकम चलाये जा रहे हैं।
4. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अपने 100 से भी अधिक अनुसंधान संस्थानों व अखिल भारतीय परियोजनाओं के विशाल नेटवर्क के सहारे देशभर की जलवायु व मृदा अनुसार जैविक खेती के अनुसंधान पर कार्य कर रहा है।

वर्तमान में लगभग 80000 हेक्टेयर पर जैविक खेती की जा रही है जिसमें प्रतिवर्ष 10 से 15 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है। जैविक कृषि की भावना विकेन्द्रीकरण पर निर्भर है जिसका अर्थ है गांव, कस्बा या जिला स्तर पर ही बीज, खाद, कीट नियंत्रक और पानी का प्रबंधन किया जाए तथा इनका समुचित उपयोग किया जाए ताकि –

1. साधनों का पूर्ण सदुपयोग व पुनर्चक्रण होता रहे।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं रोजगार पैदा हो।
3. स्वस्थ और शुद्ध पर्यावरण का विकास हो।
4. कृषक आत्म निर्भरता को प्राप्त करें।
5. कृषि का विकास हो और सभी का स्वास्थ्य अच्छा रहे।

निष्कर्ष

जैविक कृषि न केवल पर्यावरणीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भी प्रभावी है। यह पारंपरिक कृषि पद्धतियों से अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल है, क्योंकि इसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता। जैविक कृषि भूमि की उपजाऊता बनाए रखने में मदद करती है और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने में सहायक होती है। इसके अलावा, जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग ने किसानों को एक बेहतर और स्थिर आय का स्रोत प्रदान किया है। हालांकि, इसके कुछ दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं, जैसे कि प्रारंभिक लागत अधिक होना और उत्पादन की मात्रा में कमी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Fitting A Tasks and Aim of comparative physiology on a geographical basis, June 1922
2. Tansley A. G. practical plant ecology London 1926
3. Herskovits - M-J- Man and his work's New York 1948
4. Brunhes: Jean Human Geography 1934 Translation 1952
5. Vidal delablache: Le principle dela geographic general 1896
6. Kaushi, S.D. Environment and Human progress 1956
7. Kaushik, S-D- संसाधन एवं पर्यावरण रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरट–2012–13
8. Lal, D.S. Climatology - sharda pustak bhawan - Allahabad & 2013
9. गुर्जर आर.के. एवं जाट बी.सी 2004 पर्यावरण अध्ययन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

10. Ayyar, N.P. 1972 Crop regions of M.P.: A case study in graphical review of india
11. आयर एस. आर. 1983 वेजीटेशन एण्ड स्वाइल्स एण्ड वर्ल्ड पिक्चर लंदन
12. आर्थर यंग (1770) पर्यावरण एवं फसल प्रारूप इंग्लैण्ड
13. Husain M. 1976 Agriculture productivity of india An Euploratory Analysis
14. Hugat, H.J. 1968 The origin of agriculture in Africa: The Sahara
15. शर्मा, के. अरूण 2015 जैविक खेती नई दिशाएँ एग्राबायोस (इण्डिया) जोधपुर
16. Reddy S-R- 2017, Principal of organic farming Kalyani pub- New Delhi